भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 18-08-2026

बिहार में एल-नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु आवश्यक कृषि परामर्श

अगस्त माह के बीते 17 दिनों में राज्य में 111.3 मिमी वर्षा दर्ज की गई है, जो कि सामान्य से लगभग 32% कम है। जून की शुरुआत से लेकर अब तक राज्य की मानसूनी वर्षा में लगभग 40% की कमी बनी हुई है। सीवान, खगडिया और लखीसराई को छोड़ कर, राज्य के सभी 35 जिलों में बारिश की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, विशेषकर जहानाबाद (**-64**%) और भागलपुर (**-60**%) में। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के पूर्वानुमान के अनुसार, आने वाले दिनों में राज्य के अधिकतम तापमान में 2-3°C की क्रमिक वृद्धि होने की संभावना है, जबकि न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। 19 से 24 अगस्त के मध्य, राज्य के दक्षिण मध्य और दक्षिण पूर्व के जिलों में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा की संभावना है। दिनाँक 21 अगस्त में, राज्य में उत्तरी और दक्षिण पश्चिमी जिलों के अनेक स्थानों पर मेघ गर्जन / वज्रपात के साथ तेज हवा चलने की संभावना है। इन मौसमीय चुनौतियों से निपटने और फसलों को इसके संभावित नुकसान से बचाने के लिए, राज्य के किसानों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा कुछ महत्वपूर्ण उपायों को समय-समय पर अपनाने की सलाह दी गई है:

- मेड़ों की मरम्मत करें ताकि खेतों में ही वर्षा जल का संचय किया जा सके।
- कम वर्षा/सूखे के दौरान, खेत को खरपतवार-मुक्त रखें।
- खेतों में पौधों की उचित संख्या सुनिश्चित करें।
- नमी की भारी कमी रहने पर, धान के अतिरिक्त कल्ले निकाल/ हटा लें।
- खेत की सिंचाई केवल तभी करें, जब मिट्टी की सतह पर हल्की दरारें दिखने लगें।
- सिंचाई के लिए खेत को लगातार पानी से भरकर रखने के बजाय 'वैकल्पिक गीला और सूखा' (AWD) सिंचाई पद्धति अपनाएँ।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु पलवार अथवा जहाँ संभव हो, कोनो-वीडर का प्रयोग करें।
- धान की बुआई के 15-20 दिनों पर अंकुरण-बाद खरपतवारनाशी जैसे बिस्पायरीबैक सोडियम (सक्रिय तत्व) का 20-25 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव, खरपतवार में 2-3 पत्ती की अवस्था में करें।
- धान के खेतों में रोपाई के 50-55 दिनों पर निकौनी करना हितकर होगा।
- पोषक तत्वों के नुकसान को कम करने के लिए नीम-कोटेड यूरिया का इस्तेमाल करें।
- साफ मौसम में सिंचाई के बाद ही हल्की नमी में फसल को पोषक तत्व दें/ यूरिया का टॉप-ड्रेसिंग करें।
- वर्षा की कमी के कारण, फसलों की वानस्पतिक वृद्धि के चरण में आने वाले तनाव जैसे सूखा या पोषण की कमी से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% यूरिया या एनपीके (15:15:15) के घोल का छिड़काव करें।
- वर्षा जल प्रबंधन हेतु छतों पर वर्षा जल संचयन, तालाब का निर्माण, टपक एवं फव्वारा सिंचाई प्रणाली को अपनाएं। सूखे जैसी स्थितियों से निपटने के लिए, यह संचयित जल वरदान साबित हो सकता है।
- संभावित स्थितियों में कीट और बीमारी के प्रकोप से बचाव के लिए फसलों की निगरानी अवश्य करें। कीट प्रबंधन के लिए खेतों में फेरोमोन और स्टिकी ट्रैप लगाएं।
- खाली खेत में चारा फसल उगायें एवं जहाँ खेत ऊंची है या मेड़ पर अरहर की बुवाई करें।